गुरुवंदन भाष्य
सह पद्यानुवाद

सर्वोदय ग्रंथावली ६४३

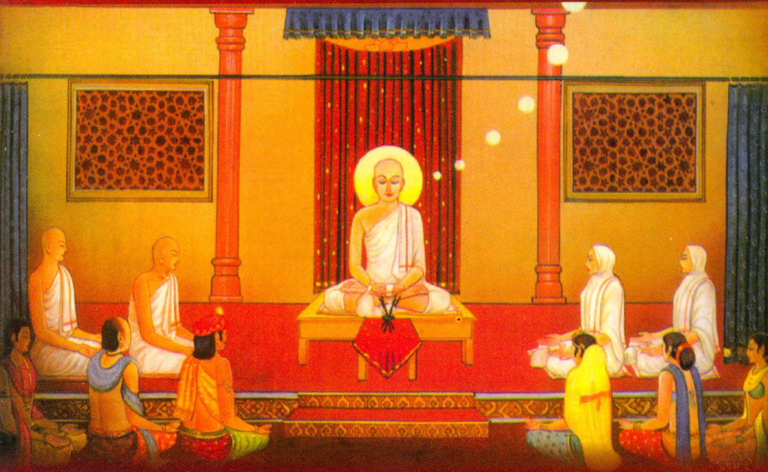

संयोजक - प.पू. श्रुतोपासक मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म. सा.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टनी विविध प्रवृतिओनी झलक

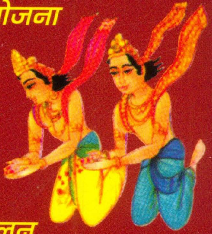

- श्री गृहमंदिरनी योजना
- श्री जिन प्रतिमाजीनी अष्ट मंगल पाटली योजना
- श्री गुरुमूर्तिओनुं निर्माण
- श्री ताम्रयंत्रोनी संकलना
- श्री आगम साहित्य
- श्री अर्वाचीन साहित्य
- श्री प्राचीन साहित्यनुं पांच-छ भाषामां संकलन
- श्री मल्टीकलर साहित्य
- पू. आ. श्री गुणसागरसूरि ज्ञानसंस्कार शिबिरनुं आयोजन
- गुरुगुण गीत गंगा केसेटोनुं आयोजन

पुस्तक प्राप्ति स्थान

विराग-तेजस-ऋजु गंगर
रमेश अपार्टमेन्ट, अहिल्या बाग सामे, थाणा-

श्री सोमचंद भाणजी लालका
मुंबई गली, पो.-अमलनेर,
जि.-जलगाम, महाराष्ट्र-४२५४०१

मनोज जैन
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर, ३८२००७

सर्वोदय ग्रंथावली - ६४३

सामायिकमां स्वाध्याय गुणश्रेणी - ४३

श्री देवेंद्रसूरिकृत
गुरुवंदनभाष्य मूळ साथे गुर्जर पद्यानुवाद

पद्यानुवादक

पूज्य श्रुतोपासक मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजी म. सा.

प्रकाशक

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्ट

सौजन्य :- श्री जैन श्वे. मू. पू. संघ ज्ञानखाता - सेंधवा (म.प्र.)

वीर सं. २५३५, वि. सं. २०६५, आर्य संवत ८२९, गुणसंवत - २१

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

।।श्री महावीराय नमः।। श्री सर्वोदय पार्श्वनाथाय नमः।। श्री गौतमस्वामिने नमः।।

अचलगच्छेश जंगमयुगप्रधान आ. श्री आर्यरक्षित जयसिंह महेन्द्रप्रभ मेरुतुंग धर्ममूर्ति कल्याण गौतम गुणसागरसूरिभ्यो नमः।।

दिव्य कृपा

कलिकाल कल्पतरु जंगमयुगप्रधान अचलगच्छेश प.पू. आ.भ.श्री गौतम - नीति - गुणसागरसूरीश्वरजी म. सा.

शुभ आशीर्वाद

अचलगच्छाधिपति प.पू. आ.भ.श्री गुणोदयसागरसूरीश्वरजी म. सा.

प.पू. युवाचार्य श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा.

पू. गणिवर्यो, पू. मुनिवर्यो आदि

प्रेरणादाता

प.पू. तपस्वी मुनिराज श्री चारित्ररत्नसागरजी म.सा.

शुभेच्छुक

प.पू. मुनि श्री जगवल्लभ-गुणवल्लभसागरजी म.सा. आदि ठाणा - ५०

मार्गदर्शक

प.पू. मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म.सा.

संपादक

मनोज आर. जैन - कोबा

मूल्य २५ रु. ।। उदयो भवतु सर्वेषाम्।। वि. सं. २०६५, प्रथमावृत्ति

प्रास्ताविकम्

गुरुने वंदन करवानी विधि अने निषेधनुं सुंदर मार्गदर्शन जेमां करायेल छे ते गुरुवंदनभाष्यना रचयिता आचार्य श्रीमान् देवेन्द्रसूरिजीए जणाव्युं छे के गुरुवंदननी विधिना अनभिज्ञ व्यक्ति द्वारा करायेल वंदन थकी ते जीव वास्तविक रीते उच्च निर्जरानो भागी थई शकतो नथी. अने जे विधि पुरस्सर वंदनादि क्रिया करे छे ते जीव अनेक भवोना उपार्जित अनंता कर्मोनो क्षय करे छे.

आपणे नित्यक्रम मुजब गुरुवंदन करीए छीए ते कया प्रकारनुं वंदन छे?, ते जो आपणे जाणता ज न होईए तो तेनो शो अर्थ छे?, वळी वंदनना केटला प्रकारो छे? इत्यादि गुरुवंदन संबंधित विधि निषेधनुं आराधकने सम्यग् ज्ञान होवुं अत्यन्त आवश्यक छे. आ भाष्य द्वारा आपणने गुरुवंदन विषयक खूबज सचोट मार्गदर्शन प्राप्त थाय छे.

आ भाष्यमां कुल ४१ गाथाओ छे. अने २२ द्वारो वडे प्रतिपादन करायेल ४९२ प्रतिभेदोमां ३ प्रकारना वंदन, वंदनीय

गुरुना अने वंदन करनारना प्रकारो, वंदननो अवसर, केटलीवार करवुं, केटला नमनवाळु करवुं, केटला शीर्षनमस्कारवाळुं करवुं, केटला आवश्यकोथी परिशुद्ध करवुं, केटला दोष टाळवा, पांच प्रकारना वंदन कोने करवा, केटलीवार करवा, शा माटे करवा इत्यादि तेमज वंदनना २२ द्वार, वंदननो निषेध, २५ आवश्यक, मुहपत्तिनी २५ प्रतिलेखना, शरीरनी २५ प्रतिलेखना, गुरुवंदनथी थतां गुण-लाभ, गुरुस्थापनानुं वर्णन इत्यादि अनेक विधिओनुं सुंदर प्रतिपादन करायेल छे.

पूज्य मुनिश्री सर्वोदयसागरजी म. सा. ता. २१-१२-०५ थी ता. २३-०४-०६ सुधी श्री वीरचंद सोनी परिवारना तलासरीना N. N. सन्स पेट्रोलपंचना निवास स्थाने रह्या हता. पूज्यश्री साथे पूज्य मुनिराज श्री गुणवल्लभसागरजी म.सा. हता. चार महिनानी स्थिरता दरम्यान पूज्य गुणवल्लभसागरजीए १५०० गाथाओ कंठस्थ करी हती ज्यारे पूज्य श्रुतोपासक विद्वान् मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजीए २० नूतन रचनाओ करी हती तेमांथी त्रणभाष्य, छ कर्मग्रंथनी मळी नव रचनाओ आ प्रकाशन श्रेणीमां आपवामां आवी छे. प्रस्तुत पुस्तिकामां अमे पूज्य मुनिश्री द्वारा

रचित गुर्जरभाषाबद्ध गुरुवंदनभाष्यनो पद्यानुवाद प्रारंभमां आप्यो छे अने पछी गुरुवंदनभाष्य मूळ आपेल छे जेथी वाचक-मुमुक्षुओ गाथाओनो स्वाध्याय अने अर्थनी अवधारणा बन्ने साथे करी शकशे. वधु ऊंडाणपूर्वक अभ्यास करवा मांगता जिज्ञासुओ माटे आ पुस्तिकाना प्रान्ते गुरुवंदनभाष्यने लगता प्राप्तसाहित्यनी टीप आपवामां आवेल छे.

परम पूज्य श्रुतोपासक विद्वान् मुनिप्रवर श्री सर्वोदयसागरजी महाराजश्रीना सत्प्रयास अने प्रेरणाथी आ रीते जीवविचार आदि चार प्रकरणो, त्रणभाष्यो अने छ कर्मग्रंथोनो मूळ साथे पद्यानुवाद सर्वप्रथमवार छपाई रह्यो छे. अने ते ज्ञानपिपासुओ माटे आशीर्वाद रूप सिद्ध थशे. पूज्य मुनिराज श्री उदयरत्नसागरजी म. सा. ए आ कार्यमां सुंदर मार्गदर्शन करेल छे. आ पद्यानुवादने अक्षरशः निरीक्षण करी आपवा बदल पं. श्री चन्द्रकान्तभाई एस. संघवी-पाटणनो तेमज दरेक प्रकरणोना साहित्यनी नोंध आपवा बदल आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर-कोबा तथा पं. जितेन्द्र बी. शाहनो (एल.डी. इन्डोलोजी-अमदावाद) अन्तःकरणपूर्वक आभार व्यक्त करीए छीए.

प्रकाशन संस्था श्री चारित्ररत्नफा.चे.ट्रस्टे प्रभु महावीरना २५३५मा निर्वाण महोत्सवना उपलक्षमां २५३५ ग्रंथो प्रकाशित करवानो महान संकल्प कर्यो छे. ए संदर्भमां ५०० जेटला ग्रंथो प्रकाशित थई चूक्या छे. तेनो अमने खूबज हर्ष छे. जेमां ५०० पूजन प्रतो पैकी २०० प्रतो प्रकाशित थई गई छे, ५०० अप्रगट ग्रंथो पैकी ५० ग्रंथो प्रेसमां छे, १३५ कथा ग्रंथो छ भाषामा अने ५ भाषामां प्रकाशित थया छे जे साधु-साध्वीजीओने भणवा माटे खूबज उपयोगी छे, ४५ आगम सचित्र गुजराती, हिंदी अने अंग्रेजी भावार्थ साथे प्रकाशित थयेल छे, ३०० रास वि. मर्यादित नकलो प्रकाशित करी छे, अचलगच्छनी १०० पूजाओ पैकी ५० प्रकाशित करी छे, १०० ढालिया, १५० अचलगच्छीय आर्चार्योना संस्कृत चरित्रो, १०८ करमशी खेतशी खोनानुं अप्रगट साहित्य, १५० श्री पार्श्वभाईनुं अप्रगट साहित्य, ५१ गुणमंजूषा प्रकाशित थयेल छे. ५१ स्तोत्रो खंडान्वय-दंडान्वय अने पदच्छेद युक्त प्रकाशन थई रह्या छे जेमां २१ स्तोत्रो प्रेसमां छे. तदुपरांत १२० सामायिकमां स्वाध्याय पुस्तिकाओ, २२५ विविध ग्रंथो आम कुल मळीने २५३५ ग्रंथो थाय छे. हमणासुधी आ कार्य धीमी गतिए चालतुं हतुं ते हवे देव-गुरु पसाये वेगवंतु चालशे एवी आशा छे.

ट्रस्टना निर्णयो

१. हवे पछी बधा ग्रंथो मल्टी कलरमां छपाशे.

२. ग्रंथो माटे दाननी अपील बहार पडशे नहि.

३. अध्ययनमां उपयोगी माहिती अलभ्य बने तो पोस्टल खर्च तथा झेरोक्ष खर्च लईने व्यवस्था करी आपवी.

४. प्रकाशित ग्रंथो कोईने पण भेटमां आपवा नहि.

५. वि.सं २०६७ पछी योग्य समये ट्रस्टनुं विसर्जन करी देवाशे.अन्ते वाचक वर्गने नम्र विनंति करीए छीए के प्रमादवश आमां कोई त्रुटीओ रही गई होय तो सूचित करशो जेथी पुनरावृत्तिमां सुधारो वधारो करी शकीशुं.

- लि. श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टवती

श्री सोमचंद भाणजी लालका

श्री जेन्तीलाल जेठाभाई मैशेरीना

सादर जयजिनेंद्र

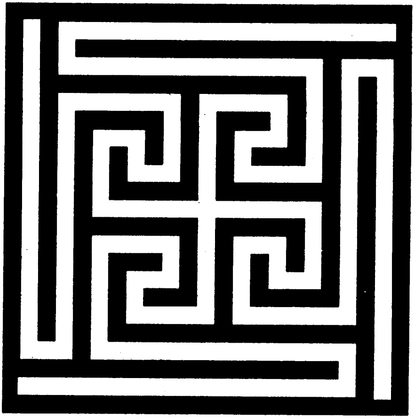

गुरुवंदन भाष्य - पद्यानुवाद

(राग- हरिगीत)

वंदनना प्रकार

नमुं वीरने गोयम गुरु जेवा श्री गुणसूरिने नमन करुं,
देवेन्द्रसूरिना गुरु भाष्यने संक्षिप्तमां गुर्जर पद्ये रचुं.
फेटा छोभ द्वादशावर्त वंदन त्रण प्रकारोथी कराय छे,
अंजलिबद्धने फेटा वंदन बे खमासणे छोभ थाय छे. १-२
धर्मनुं मूळ विनयने जाणो बे वांदणाथी द्वादशा थाय छे, ३-४
वंदन चिति कृति पूजा जाणो विनय गुरुवंदन थाय छे.
कोने करवुं कोणे करवुं ए नवद्वारोथी समजावशे, ५-६
वंदन दृष्टांत योग्य अयोग्य बावीश मूळ द्वार बतावशे. ७-८
दाता अदाता निषेध अनिषेध कारण आवश्यक पडिलेण छे,
दोष गुण स्थापना अवग्रह अक्षर पद स्थान वचन छे.
तेत्रीश आशातना विधि जाणो चारसो बाणुं पेटा भेद छे, ९
विस्तार एनो ग्रन्थथी जाणो वंदन ए नरकनो छेद छे.

गुरुवंदनना पांच नाम

प्रशस्त स्तवना वंदन कर्म रजोहरणे छे चितिकर्म,
मोक्षार्थे नमन जाणो कृतिकर्म प्रशस्त व्यापार पूजाकर्म.
कर्मनो विनाश विनयकर्म दरेके बे बे भेद जणाय छे, १०
शीतलाचार्यादि पांच दृष्टांत हवे ग्रन्थमां एने भणाय छे. ११

अवंदनीय

त्रीजु द्वार अवंदनीय साधु पासत्था अवसन्न कुशील छे,
संसक्त अने यथाछंद भेदो बे बे त्रण बे अनेक छे.
फक्त वेषधारी पासत्थ जाणो शिथिलाचारी अवसन्न छे,
माठा आचारवाळो कुशील जाणो गुण दोष संयुक्त संसक्त छे. १२
उत्सूत्र प्ररुपी यथाछंदी छे चोथुं द्वार हवे कहेवाय छे,
आचार्य उपाध्याय प्रवर्तक स्थविर रत्नादिक वंदाय छे. १३

अवंदनीय, वंदन करवाना अनवसर

माता पिता अने जेष्ठ भ्राता लघुवये रत्नादिक न वंदाय, १४
व्यग्रचित्त पराङ्मुखी प्रमादे आहार निहार पांचे न वंदाय. १५
वंदन करवाना अवसर, वंदन करवाना निमित्तो
प्रशांत उपशान्तादि गुरुने आज्ञा मागीने वंदन कराय, १६

प्रतिक्रमण स्वाध्यायादि माटे कारणे गुरुने वंदन कराय. १७

द्वादशावर्त वंदनना आवश्यको पच्चीश

दशमा द्वारे पच्चीश आवश्यक द्वादशा वंदने जणाय छे, १८

पच्चीश आवश्यके एक विराधे कर्म निर्जरा न जणाय छे. १९

मुहपत्तिनी पडिलेहणा

मुहपत्तिनी पच्चीश लेखना अग्यारमा द्वारमां कहेवाय छे,

एक दृष्टि नव प्रमार्जना छ परफोडा नव अखोडा छे. २०

शरीरनी पडिलेहणा

शरीरनी पच्चीश पडिलेणा बारमा द्वारे जणावाई छे,

पुरुषो पच्चीश स्त्री पंदर करे एम ग्रन्थे गणावाई छे. २१

कर्म निर्जराए विधि करवी बत्रीश दोषोने त्यजाय छे, २२-२५

निर्वाण पामे के वैमानिके जाय वंदने छ गुण पमाय छे. २६-२७

गुरुनी स्थापना

गुरु विरहे गुरुवंदन करो अक्ष पुस्तक चित्र मूर्तिमां, २८-२९

गुरु विरहे सामायिके स्थापो स्थापनाचार्य गुरुभक्तिमां. ३०

अवग्रह - वंदनसूत्रना

साडात्रण हाथ अवग्रह जाणो विरुद्ध तेर हाथ जणाय छे, ३१

बस्सो छव्वीस अक्षर जाणो बस्सो एक लघु जणाय छे. ३२

शिष्यना ६, गुरुना ६ स्थान, ३३ आशातना

ओगणीशमा द्वारमां शिष्यना छ स्थान वंदन जणाय छे, ३३

गुरुना छ स्थान वंदन जाणो तेत्रीश आशातना टळाय छे. ३४-३७

पग लगाडवो ते जघन्य छे थुंकादि मध्यम छे आशातना,

आज्ञाथी विरुद्ध आचरण उत्कृष्ट गुरुनी छे आशातना.

श्राद्धविधि वृत्तिमां जणाय छे विस्तार ग्रन्थथी जाणी लीओ, ३८

बावीस द्वारे गुरुवंदनने लघु प्रतिक्रमण जाणी लीओ. ३९

उपसंहार, फळ

आ प्रमाणे गुरुवंदना रची मोक्ष मेळववा माटे आ,

तलासरी तीर्थे मल्लि सानिध्ये बे हजार बांसठे रचना आ.

एन. एन. सन्से आर्य कल्याण कृपा मळी गौतम गुणसूरि,

प्रभु कृपाए सरल रचना सर्वोदयथी गुणभरि.

इति गुरुवंदन भाष्यनो गुर्जर भाषामय पद्यानुवाद संपूर्ण

गुरुवंदन भाष्य मूल

गुरुवंदणमह तिविहं, तं फिट्टा छोभ बारसावत्तं;
सिरनमणाइसु पढमं, पुण्णखमासमण-दुगिबीअं. १

जह दूओ रायाणं, नमिउं कज्जं निवेइउं पच्छा;
वीसज्जिओ वि वंदिअ, गच्छइ एमेव इत्थ दुगं. २

आयाररस्स उ मूलं, विणओ सो गुणवओ अ पडिवत्ती;
सा य विहि-वंदणाओ, विही इमो बारसावत्ते. ३

तइयं तु छंदण-दुगे, तत्थ मिहो आइमं सयलसंघे;
बीयं तु दंसणीण य, पयट्ठिआणं च तइयं तु. ४

वंदण-चिइ-किइकम्मं, पूआकम्मं च विणयकम्मं च;
कायव्वं कस्स व? केण, वावि? काहेव? कइ खुत्तो?. ५

कइ ओणयं? कइ-सिरं, कइहि व आवस्सएहिं परिसुद्धं?;
कइ दोसविप्पमुक्कं, किइकम्मं कीस कीरइ वा. ६

पणनाम पणाहरणा, अजुग्गपण जुग्गपण चउ अदाया;
चउदाय पणनिसेहा, चउ अणिसेह-ट्ठकारणया. ७

आवस्सय-मुहणंतय, तणुपेह-पणीस दोस बत्तीसा;
छगुण गुरुठवण दुग्गह, दुछवीसक्खर गुरु पणवीसा. ८
पय अडवन्न छठाणा, छगुरुवयणा आसायण-तित्तीसं;
दुविही दुवीसदारेहिं, चउसया बाणउइ ठाणा. ९
वंदणयं चिइकम्मं, किईकम्मं विणयकम्मं पूआकम्मं;
गुरुवंदण-पण-नामा, दव्वे भावे दुहाहरणा (दुहोहेण). १०
सीयलय खुड्डए वीर, कन्ह सेवग दु पालए-संबे;
पंचे ए दिट्ठंता, किइकम्मे दव्व-भावेहिं. ११
पासत्थो ओसन्नो, कुसील संसत्तओ अहाछंदो;
दुग-दुग-ति-दुग-णेगविहा, अवंदणिज्जा जिणमयंमि. १२
आयरिय उवज्झाए, पवत्ति थेरे तहेव रायणिए;
किइकम्म निज्जरट्ठा, कायव्व-मिमेसि पंचण्हं. १३
माय पिअ जिट्ठभाया, ओमावि तहेव सव्व-रायणिए;
किइकम्म न कारिज्जा, चउसमणाई कुणंति पुणो. १४
विक्खित्त पराहुत्ते, अ पमत्ते मा कयाइ वंदिज्जा;
आहारं नीहारं, कुणमाणे काउकामे अ. १५

पसंते आसणत्थे अ, उवसंते उवट्ठिए;
अणुन्नवि त्तु मेहावी, किइकम्मं पउंजइ. १६
पडिकमणे सज्झाए, काउस्सग्गा-वराह पाहुणए;
आलोयण संवरणे, उत्तमट्ठे य वंदणयं. १७
दोवणय महाजायं, आवत्ता बार चउसिर तिगुत्तं;
दुपवेसिग-निक्खमणं, पणवीसावसय किइकम्मे. १८
किइकम्मंपि कुणंतो, न होइ किइकम्म-निज्जराभागी;
पणवीसा मन्नयरं, साहु ठाणं विराहंतो. १९
दिट्ठिपडिलेह एगा, छउड्ढ-पप्फोड तिग-तिगं-तरिआ;
अक्खोड पमज्जणया, नव नव मुहपत्ति पणवीसा. २०
पायाहिणेण तिअ तिअ, वामेअर बाहु सीस मुह हियए;
अंसुड्ढाहो पिट्ठे, चउ छप्पय देह-पणवीसा. २१
आवस्सएसु जह जह, कुणइ पयत्तं अहीण-मइरित्तं
तिविह-करणोवउत्तो, तह तह से निज्जरा होइ. २२
दोस अणाढिअ थड्ढिअ, पविद्ध परिपिंडिअं च टोलगइं;
अंकुस कच्छभ-रिंगिअ, मच्छुव्वत्तं मणपउट्ठं. २३

वेइयबद्ध भयंतं, भय गारव मित्त कारणा तिन्नं;
पडिणीय रुट्ठ तज्जिअ, सढ हीलिअ विपलिउं चिययं. २४
दिट्ठमदिट्ठं सिंगं, कर तम्मोअण अणिद्धणालिद्धं;
ऊणं उत्तरचूलिअ, मूअं ढड्ढर चुडलियं च. २५
बत्तीसदोस-परिसुद्धं, किइकम्मं जो पउंजइ गुरूणं;
सो पावइ निव्वाणं, अचिरेण विमाणवासं वा. २६
इह छच्च गुणा विणओ-वयार माणाइभंग गुरुपूआ;
तित्थयराण य आणा, सुअधम्मा-राहणा किरिया. २७
गुरुगुणजुत्तं तु गुरुं, ठाविज्जा अहव तत्थ अक्खाई;
अहवा नाणाइतिअं, ठविज्ज सक्खं गुरुअभावे. २८
अक्खे वराडए वा, कट्ठे पुत्थे अ चित्तकम्मे अ;
सब्भाव--मसब्भावं, गुरुठवणा-इत्तरावकहा. २९
गुरूविरहंमि ठवणा, गुरूवएसोवदंसणत्थं च;
जिणविरहंमि जिणबिंब सेवणा-मंतणं सहलं. ३०
चउदिसि गुरूग्गहो इह, अहुट्ठ तेरस करे सपरपक्खे;
अणणुन्नायस्स सया, न कप्पए तत्थ पविसेउं. ३१

पण तिग बारस दुग तिग, चउरो छट्ठाण पय इगुणतीसं;
गुणतीस सेस आवस्सयाई, सव्वपय अडवन्ना. ३२

इच्छा य अणुन्नवणा, अव्वाबाहं च जत्त जवणा य;
अवराहखामणावि य, वंदणदायस्स छट्ठाणा. ३३

छंदेण णुजाणामि, तहत्ति तुब्भं पि वट्टए एवं;
अहमवि खामेमि तुमं, वयणाइं वंदणरिहस्स. ३४

पुरओ पक्खासन्ने, गंता चिट्ठण निसीअणा-यमणे;
आलोयण पडिसुणणे, पुव्वालवणे अ आलोए. ३५

तह उवंदस निमंतण, खद्धा-ययणे तहा अपडिसुणणे;
खद्धत्ति य तत्थगए, किं तुं तज्जाय नो सुमणे. ३६

नो सरसि कहं छित्ता, परिसंभित्ता अणुट्ठियाइ कहे;
संथारपायघट्टण, चिट्ठु-च्च-समासणे आवि. ३७

इरिया कुसुमिणुसग्गो, चिइवंदण पुत्ति वंदणा-लोयं,
वंदण खामण वंदण, संवर चउछोभ दुसज्झाओ. ३८

इरिया चिइवंदण पुत्ति, वंदण चरिम-वंदणा-लोयं;
वंदण खामण चउछोभ, दिवसुसग्गो दुसज्झाओ. ३९

एयं किइकम्मविहिं, जुंजंता चरण-करण-माउत्ता;
साहू खवंति कम्मं, अणेगभवसंचियमणंतं. ४०

अप्पमइ-भव्व-बोहत्थ, भासियं विवरियं च जमिह मए;
तं सोहंतु गियत्था, अणभिनिवेसी अमच्छरिणो. ४१

इति गुरुवंदन भाष्य संपूर्ण

गुरुवंदन भाष्य अंगेनी कृतिओनी सूचि

कृति नाम	कर्ता नाम
भाष्यत्रय	दवेंद्रसूरि
भाष्यत्रय-(सं.)टीका	अज्ञात जैनश्रमण
भाष्यत्रय-(सं.)अवचूरि	सोमसुंदरसूरि
भाष्यत्रय-(सं.)अवचूरि	अज्ञात जैनश्रमण
भाष्यत्रय-(गु.)विशेषार्थ	चदुलाल न्हानचंद
भाष्यत्रय-(गु.)भावार्थ	ज्ञानविमलसूरि
भाष्यत्रय-(गु.)शब्दार्थ	खमशंकर लक्ष्मीशंकर वर्द्धमानकर
भाष्यत्रय-(मा.गु.)विवरण	धर्मरत्नसूरि-शिष्य
भाष्यत्रय-(गु.)विवेचन	अमृतलाल पुरषोत्तमदास
चत्यवंदनादिभाष्यत्रय-(गु.)विवेचन	कर्पूरविजय
भाष्यत्रय-(मा.गु.)बालावबोध	ज्ञानविमलसूरि
भाष्यत्रय-(मा.गु.)बालावबोध	अज्ञात जैनश्रमण
भाष्यत्रय-(मा.गु.)टबार्थ	भगवानजी करमचंदजी
भाष्यत्रय-(मा.गु.)टबार्थ	लावण्यविजय

गुरुवंदन भाष्य अंगेनी कृतिओनी सूचि

भाष्यत्रय-(प्रा.अमा.गु.)अर्थयंत्र पदार्थविवरण	सुखसागर
भाष्यत्रय-(हिं.)विवेचन	रत्नसेनविजय
भाष्यत्रय-(गु.)अर्थ	हेमचंद्रसूरि
गुरुवंदनभाष्य-(गु.)भावार्थ	चंदुलाल
गुरुवंदनभाष्य-(हिं.)अनुवाद	प्रतापमलजी सेठिया
गुरुवंदनभाष्य-(गु.)छंदोबद्धअनुवाद	सुशीलविजय
गुरुवंदनभाष्य-(गु.)संक्षिप्त सार	सुशीलविजय

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्टना प्रकाशनो

- 500 पूजनप्रतो
- 135 6 भाषाना कथाग्रन्थो (अप्राप्य)
- 350 अप्रगट ग्रन्थो हस्तप्रतोमांथी लखाई गया छे
- 45 आगमग्रन्थो (अप्राप्य)
- 120 सामयिकमां स्वाध्याय काव्यकृतिओ (क्रमसर छपाय छे)
- 25 अचलगच्छेश पू. आ. कल्याणसागरसूरि तथा पू. आ. विद्यासागरसूरि रचित स्तोत्र आधारे खंडान्वय-दंडान्वय
- 75 पू. अचलगच्छेश तथा आचार्य भ., साधु भगवंतना संस्कृतमां जीवनचरित्रो

श्री चारित्ररत्न फा. चे. ट्रस्ट तरफथी २५०० ग्रन्थो प्रकाशित करवानी भावना छे. हाल १२५० ग्रन्थोनी झलक आपी छे. लेखक 'श्री पार्श्व' नुं साहित्य क्रमसर प्रकाशित करवानी भावना छे.

।। उदयो भवतु सर्वेषाम् ।।

Printed by. Navprabhat 98255 98855

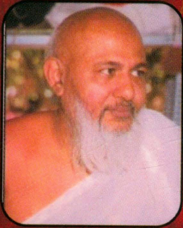

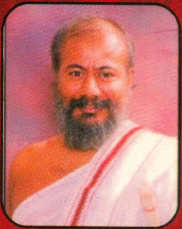

અચલગચ્છાધિપતિ પ.પૂ.આ.ભ. શ્રી ગુણસાગરસૂરીશ્વરજી મ.સા.નો સર્વોદયજીનો પરિવાર

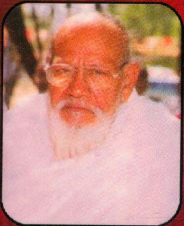

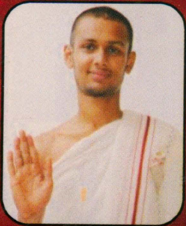

ARYA GRAPHICS - 09925801910